Sh.
44

४२८
भक्ष्य

पी. सं. 4154

4154 - (41)

लघुवृत्ति व्याकरण

35 पत्रे   व्याकरण (गुरुमुखी लिपि)

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

कारउन

~~[illegible]~~

Sharada

By krupalakukila of kashmir

No. 44 ~~51~~

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri



CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

ऐं क्लृं कृं नि त्रि क व यं ।। ं ल क ब्रु ब्रु क द व
ं क य ठ ठ क क ।। त्रिभु ठ त्रु त्रु ठ भु त्रि ।। ० ।।
ओं नमः भि धे चे घ्रे घ्रे घे घे घे घे पि सं न्ने पि
जगति ।। ३ [illegible] ।। ह्रं स्य भि क लं कलं कलं कलं
ब्रि त्रि भ्रु व ठि ।। जि ।। १ ।।
CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

अस्य पिप्पलाद ऋषिः छन्दः [illegible] देवता ह्रां
ओं ह्रां [illegible] ह्रां बीजं कीलकं
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ऋषिः ॥ ऋषिर्वन्दे
अभ्यर्च्य प्रथमं मन्त्रस्य छन्दः
[illegible] ऋषिः ॥ ऋषिः [illegible] ह्रां
[illegible] [illegible] ॥ अंभट्टे
नमोऽस्तु ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] नीयं भवति ॥ [illegible]
नः ॥ ऋषिर्वन्दे [illegible] प्रथमं
छन्दः अभ्यर्च्य [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ह्रां ॥ [illegible]

कु. ३

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

गघङ जझञ डढण दधन बभम यरलव
सप्तमाः ॥ द्विजः पञ्चपञ्चमः ॥ कच
टतपाः पंचमत्रिवर्गाः पञ्चवर्गसंज्ञ
स्युः कवर्गः कखगघङ चवर्गः चछज
झञ टवर्गः टठडढण तवर्गः तथद
धन पवर्गः पफबभम ॥ वर्गाणां प्रथम
द्वितीयाः सप्तमाः सूक्ष्मघोषाः ॥ सूक्ष्मघोषाः
कख चछ टठ तथ पफ सप्तम ॥ घो
षवन्तो ॥ सूक्ष्मघोषेभ्योऽन्ये ह्रस्ववर्णाः घो
षवत्संज्ञाः स्युः घोषवन्तः ग० गघङ ज
झञ डढण दधन बभम यरलव
ह ॥ सर्वनामिकादयोऽन्तस्थाः ॥
क॰ सघोषा यरलवाः ॥ ऊष्माणः सप्तम

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

सूनतिक्रमयत्त्रिसूर्ययेत्।

समन्वेवत्नः सर्वेत्पते स्तीर्थः समस्
तु पस्त्रलेपमात्रेति पुत्रिकत्रांपुत्र
त्रं वत्नं विपद्यमत्रुवत्रिसत्व
त्रदत्तं वालभेदनिवृद्धयेवसनमा
स्तीर्थेनते॥ इत्युनमस्त्रं पवेत्नवयेत्॥
दिश्टिः द्विजेन समभुस्यः देवर्षिः
स्तीर्थस्त्र लैपात्रव त्रिमधीयं कथ्य॥
सवत्नववेत्ना॥ सकरकौतुक
रंकरिमपते तकरः स्तुत्वा पवलेपत्र
तवं सर्वं तमसः॥ तवत्नाते॥ सव
त्न तवेत्नपते तकरः स्तुत्वा पवलेप
त्र तवेसके गत्लेसकं तमदत्ते॥ तवत्न
सगा॥ सवत्न तवेत्नपते सुवस्तुत्वा प
लेपत्र तवत्नमास्तुः॥ इवत्नमन्ना॥

अब तथं
मे तद्धिः

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

इवर्णो यकारम्॥ वृत्तिः अत्र अस्य पूर्वं
यकारमाप्नोति इवर्णे परस्थे दध्यत्र [illegible]
[illegible]॥ ऋवर्णः परस्थे रकारम्॥
वृत्तिः ऋकारमाप्नोति [illegible]
[illegible]॥
उवर्णो वकारम्॥ वृत्तिः उवर्णे परस्थे स्वरे
पूर्वं वकारमाप्नोति॥ मध्वत्र इति [illegible]
[illegible]॥ ऌ लकारम्॥ वृत्तिः लकारे अस्य पूर्वं
लकारमाप्नोति। [illegible] इति [illegible]
इति॥ [illegible]॥ वृत्तिः मकारः [illegible] आप्नोति॥
[illegible]॥ [illegible]॥
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] आप्नोति।
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] वृत्तिः॥

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

सत्रैः वत्रेशब्दे चनान्तः श्रुतं सन्तुः सद्धि स भाउः सभाक्तिः
ड॥ वनेऽम्बुजपङ्क्तिर्भवा॥ सकारः पञ्च
त्रैवनेऽपि उद्धवनस्य पङ्क्तिर्भवा श्रोत्रियस्त्व
त्स्मुरः॥ उद्धरेथि र्नुकरेथि॥ ओष्ठ्यौ॥ ॥
इति वृषभनसन्धिः॥ ॥ ॥ सकारयेकष्टि॥
सकारयेकष्टे भिन्नि विसर्ग उत्तरं प्रति॥
उवकोत। सकारलोपः। दीर्घः॥ सपू
र्वैर्दीर्घरयेन॥ सकारउः विसर्ग
लेपः श्रुतं पङ्क्तिं प्रति। सकारलिङ्ग
पौ॥ रविसर्जनीयः लोपं पत्रः सन्धिः॥
विसर्जनीयस्य लोपं ऽत्त पत्रः सन्धिक
दं न भूतं। कस्य सुद कस्यापद॥ रघ्र
तिवन्तां भिपरैयि॥ पदसुर विदिते
विसर्ग नाभि परे पिमनारेतं प्रमेति॥

कं०
७

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible] ॥
कापयोर्जिह्वामूलीयं नव ॥ विसर्जनी
यः कापयोः परयोः जिह्वामूलीयं व
प्नोति कः करोति कः पचति ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
विसर्जनीयस्य [illegible] ॥ विसर्जनी
य [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
विसर्जनीयः [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ विसर्ज
नीयः [illegible] ॥
[illegible] ॥ पफयोरुपध्मानीयं नव ॥ विस
र्जनीयः पफयोः परयोः उपध्मानीयं वा प्नो
ति [illegible] ॥ [illegible]

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow. Digitized by eGangotri

[illegible] ॥

[illegible] ॥ रेफो रेफे परे लोपमाप्नोति ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥ विसर्जनीयः स-

[illegible] कः [illegible]

कः [illegible] कः [illegible] कः [illegible] कः [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] परः

विसर्जनीयः [illegible] परे लोपं [illegible] ति ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] परे विसर्जनीयः [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ घोषवति लोपं ॥

[illegible] परः विसर्जनीयो घोषवति परे लोपं

[illegible] ॥ नामिपरो रं ॥

नामिनः परो विसर्जनीयो रत्वमाप्नोति ॥ [illegible]

[illegible] ॥ घोषवत्परः ॥ नामिनः परः

विसर्जनीयो घोषवति [illegible] परे रत्वमाप्नोति ॥

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

मश्रिगरुश्रीनाथः मपीरकुण्डि। मनतृयावि
भाषुमुभकरं कथवमये॥ मनुउरपद
भुक्षुनतृयकरउदे श्रिभनः कापपदे
श्रभकरभपृष्ठि मययभुरः मययभुभुः मयय
भुमः मययभुभः मययभुंभः मययभुकः
मयभदं मनुउरपरभुकिं उपपयः क
भः भुकरस्युपिमसुउे उभुरः कापपदेश
किं मयेधनः पयेविभुः मनतृयभृकिं।
भुक्रभः॥ विभनभविः॥ भत्रिभकरंभ
भत्रभो॥ ॥ तिनभः भवभृहेः॥ ति ८॥ ८॥

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri